राजस्थान की नयी हिन्दी कविता : एक मूल्यांकन

✧ विजेन्द्र सिंह गुर्जर

राजस्थान का हिन्दी काव्य उन्हीं पगडंडियों और प्रशस्त राजमार्गों से होकर आगे बढ़ा है। जिन पर हिन्दी की कविता कभी रूठती, कभी मचलती, कभी ठिटकती और कभी द्रुतगति से दौड़ती हुई चली है। उन्हीं परिस्थितियों और परम्पराओं का चित्रण व पोषण राजस्थान के हिन्दी कवि ने किया है।

राजस्थान में नयी कविता का एक स्वर बड़ी तेजी से सामने आया है। प्रदेश की कविता में गहराई आने लगी है और कई कवि अपनी जागरूक चेतना से समय और परिवेश को जीते हुए सही कलम का इस्तेमाल कर रहे है। इनकी संवेदना सूखी हुई नहीं, इनका परिवेश आरोपित नहीं और इनका शिल्प अनगढ़ नहीं। ऐसे कवियों में ऋतुराज, हेमन्त शेष, विजेन्द्र, रणजीत, भागीरथ भार्गव, हरीश भादानी, मणिमधुकर, ताराप्रकाश जोशी, रामदेव आचार्य, नन्द चतुर्वेदी, नन्दकिशोर आचार्य, जयसिंह नीरज, माधव हाड़ा, सावित्री डागा आदि के नाम लिये जा सकते है। नयी कविता के रचनाकारों ने समकालीन जीवन और परिवेश की जिन व्यापक अनुभूतियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया हैः वे नितान्त प्रामाणिक है, क्योंकि वे संवेदन के स्तर पर मुक्त और यथार्थ जीवनबोध से सम्पृक्त है। आज के जीवन में परिव्याप्त अनास्था, अनिश्चय, अविश्वास, अराजकता, अतृप्ति, पलायन, पराजय, कुंठा, नैराश्य और मूल्यगत संक्रमणशीलता की भयावह स्थितियों के सशक्त चित्रण के साथ–साथ मानवीय जीवन के प्रति आस्था और युग–जीवन के प्रति अटूट विश्वास का भी कलात्मक निरूपण नये कवि ने किया है। युद्ध की विभीषिका और जैविक अस्तित्व के प्रति मनुष्य के सचेत बोध को रूपायित करने वाली असंख्य कविताओं में संवेदन तत्व की विशद् व्यंजना निश्चयतः नयी कविता के समृद्ध सृजनात्मक रूवरूप की परिचायक है। समकालीन चिन्तन को रूपायित करने वाली अस्तित्ववादी, क्षणवादी आदि विचार धाराओं तथा नगरीय बोध और आधुनिक बोध की भी सटीक अभिव्यक्ति अनेक कविताओं में हुयी है।

व्यक्ति जीवन की निष्ठाओं और पारिवारिक एवं सामाजिक परिसंदर्भो में उनके संघर्षओ प्रतिक्रियाओं को रूपायित करने में नये कवि निश्चयतः सफल हुए है। रूढि निबद्ध संस्कारशीलता, जर्जरित विश्वासों, पतनशील मूल्यों और डिगती आस्थाओं के उनमूलन हेतु असंख्य विद्रोही स्वर इस कविता में उभरे है। जीवनयापन की कृत्रिम प्रविधियों और मुखौटे धारण किये हुए मानवीय आचरण–पद्धतियों के प्रति कवियों का आक्रोश अनेक कविताओं में प्रकट हुआ है। अनास्था, आक्रोश और विद्रोह के साथ–साथ अटूट आस्था, अदम्य विश्वास और समकालीन युग जीवन के प्रति सहज स्वीकृति का भावोन्मेष नयी कविता में दृष्टिगत होता है। कुंठित आत्मचेतना और दमित वासनाओं से युक्त भंदेस चित्रण का कविताओं में सामान्यतः अभाव है। मानवीय संवेदनाओं के गहन स्तरों और सचेतन मन स्थितियों के तलस्पर्शी चित्रण में रचनाकारों ने अपनी सृजन सामर्थ्य का प्रभूत परिचय दिया है।

यह तो नहीं कहा जा सकता है कि राजस्थान में नये कवियों की जो पीढ़ी उभर कर आ रही है, वह पूर्ववर्ती पीढ़ी से एकदम अलग है, किन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि इस पीढ़ी में एक नयी चेतना है, नयी जागृति है और विद्रोह के नये स्वर। अनेक कवि ऐसे भी हैं जो यथार्थ की स्थितियों को हृद्यंगम भी करते है और साथ ही साथ आध्यात्म चेतना से भी जुड़े हुए हैं ये कवि मूल्यधर्मी हैं और जीवन मूल्यों की तलाश में काव्य–सृजन कर रहे हैं लगता है जैसे ये कवि पूरी आस्था और जिजीविषा के साथ सृजनरत है और वर्तमान त्राषद परिवेश से मुक्ति पाने के लिए उन शाश्वत मूल्यों की ओर संकेत कर रहे हैं, जो हमें सही दिशा दे सकते हैं या हमारे जीवन को उस बिन्दु तक ले जा सकते हैं, जहां तक खड़े होकर हम सही और गलत का निर्णय कर सकें। ऐसे कवियों में गोविन्द माथुर, भागीरथ भार्गव, हरीश भादानी, रणजीत, ऋतुराज और हेमन्त शेष का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जहां तक शिल्पगत–विनियोजन की दृष्टि से मूल्यांकन का प्रश्न है। शिल्प संरचना के विभिन्न प्रतिमानों के सोदाहरण विवेचन के आधार पर यह प्रतिपादित हो चुका है कि नये कविता अनेक नवीन रचना–धर्मी आयामों और शैल्पिक प्रतिमानों से संभूत है। बिम्ब, प्रतीक, उपमान, विधान, शब्द–समूह, लोकोक्ति व मुहावरे, शब्द शक्ति, अप्रस्तुत विधान, अर्थ–लय, काव्य–रूप और भाषात्मक रूप विधान के क्षेत्र में नयी कविता के कृतिकारों ने सार्थक प्रयोगों के साथ–साथ अपेक्षित मौलिकता का भी निदर्शन किया है। नवीन शब्द विधान के द्वारा कवियों ने भाषा के भंडार को समृद्ध भी किया है, किन्तु कहीं–कहीं नवीन शब्द संरचना के क्रम में क्रिया–पदों और संज्ञाओं की तोड–मरोड़ और विराम चिन्हों के अनर्गल प्रयोग कविता को असंम्प्रेषणीय किंवा जटिल भी बना दिया है।

हिन्दी प्राध्यापक, श्री भवानी निकेतन पी.जी. महाविद्यालय,जयपुर

संवेदनापूर्ण सौन्दर्य की अभिव्यक्ति, जीवन और प्रकृति से जुड़े उपादान का अलंकार, बिम्ब, प्रतीक और रूपक के रूप में प्रस्तुतीकरण पत्रात्मक शैली में कविता, यात्रा कविता, एकालाप संवाद, सीधा साक्षात्कार वाली शैली के प्रयोग पर भी विवेचनाऐं प्रस्तुत की है। जहां कहीं पौराणिक पात्रों, प्रतीकों का नवीन संदर्भो में सफल, सार्थक और अर्थवान उपयोग हुआ है, उसका भी उल्लेख किया है। रूप, रंग, छाया, विविधता, चिन्तन प्रयोग, व्यंग्य, विद्रुपता की आक्रोश युक्त अभिव्यक्ति का स्तर प्रस्फुटित हुआ है, तो मानवीय स्नेहपूर्ण सहजता, उद्दाम वर्ग संघर्ष, गहरा अन्तःसंघर्ष, किसान–मजदूर की जीवन शैली का यथार्थ चित्रण, राजनैतिक अव्यवस्था को उजागर करते हुए, मांसलव स्वस्थ रूमानीयत अलंकरण, क्रान्तिचेतना स्वर, सांस्कृतिक मूल्यों में आस्था, वैज्ञानिक तकनीकी को स्वीकृति के विविध स्वर दृश्य बिम्ब जो प्रान्त के समर्थ रचनाकारों द्वारा अपनी नयी कविताओं में प्रयुक्त व प्रस्तुत हुए है, उन्हें विवेचित करने का विनम्र प्रयास किया है।

नयी कविता का प्रतिपाद्य और शिल्प की दृष्टि से महत्वांकन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि नयी कविताकी कुछ निजी विशेषताएँ और उपलब्धियाँ रही है यथा इन उपलब्धियों के आधार पर यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि राजस्थान में नयी कविता के सृजन की एक समृद्ध परम्परा का विकास गत चार–पॉच दशकों में हुआ है। इस दृष्टि से राजस्थान की नयी कविता का हिन्दी की नयी कविता को योगदान निश्चयतः महत्वपूर्ण है।

जहां तक नयी कविता की सृजनात्मक संभावनाओं का प्रश्न है। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि नयी कविता अपरिमित सृजन संभावनाओं से संभूत है। अनेक कविताओं में संवेदना का उदात्त स्वरूप और शैल्पिक प्रतिमानों की गरिमा इन कविताओं के सृजनात्मक गौरव का जीवन्त प्रमाण है। कवियों में नन्द किशोर आचार्य, प्रकाश आतुर, हेमन्त शेष, भगवती लाल व्यास, रामदेव आचार्य, सुधा गुप्ता, नन्द चतुर्वेदी, ऋतुराज, मणि मधुकर, हरीश भादानी, ताराप्रकाश जोशी, मालीराम शर्मा, मदनगोपाल शर्मा, हरीश कर्मचन्दानी, भागीरथ भार्गव, तारादत्त निर्विरोध, विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, विजेन्द्र, रणजीत सिंह, नीरज कमरमेवाड़ी, रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', मनोहर प्रभाकर, सावित्री डागा, रमासिंह, गोविन्द माथुर, मदन केवलिया आदि की कविताओं का रचनात्मक स्तर न केवल अभिनन्दनीय है, अपितु सृजन की असंख्य संभावनाओं से संभूत भी है।

जिन कवियों ने जीवन की गहराईयों में प्रवेश करके अपनी अनुभूतियों को स्वस्थ और सहज शिल्प में बांधने का प्रयास किया है, वे आज भी सृजनरत है और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हमें उनसे अभी और अनेक आशाऐं हैं। वास्तविकता यह है कि राजस्थान की नयी हिन्दी कविता प्रतिपाद्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से अपना महत्व रखती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि राजस्थान का नया कवि अपनी इस अग्रगामिता को समझे तथा उनको नेतृत्व दें, जो अभी तक आगे–आगे चलकर उसके संघर्ष की उपलब्धियों को झुठलाते रहे और ऐसा नया कवि अब पीछे रह भी नहीं सकता। राजस्थान की नयी पीढ़ी में अनेक ऐसे नाम सामने आ चुके है, जिनके माध्यम से राजस्थान की नयी कविता समस्त हिन्दी जगत् का नेतृत्व करती हुई इतिहास के अन्धकार पर विजय पाएगी।

सन्दर्भ :–

1. डॉ. कैलाश वाजपेयी – आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प
2. सुरेशचन्द्र सहल : नयी कविता और उसका मूल्यांकन
3. सं. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश
4. डॉ. भागीरथ मिश्र – काव्य शास्त्र
5. आधूनिक हिन्दी कविता में शिल्प
6. हिन्दी की नयी कविता
7. डॉ. श्रीराम नागर–हिन्दी की प्रयोगशील कविता और उसके प्रेरणा स्त्रोत
8. सुधा गुप्ता, एकान्त, अंक अगस्त, 66
9. नन्द चतुर्वेदी, युद्ध एक मनः स्थिति, हाड़ौती वाणी
10. कुँवर नारायण नयी कविता 3